NAAC ACCREDITED "B++" (CGPA 2.89)

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya

Jagannathpur, Dhurwa, Ranchi-834004

www.ysmranchi.net

ysmranchi4@gmail.com

Course : MJ- 4 Sem : 3

(NEP)

राजपूतों के प्रमुख राजवंश राजनैतिक इतिहास

By : Dr. Amrita Dutta

Lecture No. 72

© All Copyrights are Reserved

This Video is an Intellectual Property of Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, located in Dhurwa, Ranchi, Jharkhand, holds the intellectual property rights for this video.

राजपूतों की उत्पत्ति

ब्राह्मणों से

आबू यज्ञ से

वैदिक आर्यों से

सूर्यवंशी

हूणों/शक

- ✓राजपूतों के प्रमुख राजवंश
- ✓गुर्जर-प्रतिहार वंश
- ✓इतिहास के साधन
- ✓उत्पत्ति
- ✓राजनैतिक इतिहास
- ✓नागभट्ट प्रथम
- ✓वत्सराज
- ✓नागभट्ट द्वितीय
- ✓रामभद्र
- ✓मिहिरभोज प्रथम

राजपूतों के प्रमुख राजवंश

गुर्जर-प्रतिहार वंश

अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहारवंश था जो गुर्जरों की शाखा से सम्बन्धित होने के कारण गुर्जर- प्रतिहार कहा जाता है।

➢इस वंश की प्राचीनता पाँचवी शदी तक जाती है। पुलकेशिन् दवितीय के ऐहोल , लेख में गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम हुआ है।

➢वाण के हर्षचरित में भी गुर्जरों का उल्लेख किया गया है। चीनी यात्री हएनसांग क-चे-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है जिसकी राजधानी पि-लो-मो-ली अर्थात् भीनमल में थी।

इतिहास के साधन

गुर्जर -प्रतिहार वंश के इतिहास के प्रामाणिक साधन उसके
- बहुसंख्यक अभिलेख हैं।

- इसमें कोई तिथि अंकित नहीं है। यह प्रतिहारवंश के शासकों की राजनैतिक उपलब्धियों तथा उनकी वंशावली को ज्ञात करने का मुख्य साधन है।

- प्रतिहारों के समकालीन पाल तथा राष्ट्रकूटवंशों के लेखों से प्रतिहार शासकों का उनके साथ सम्बन्धों का ज्ञान होता है।

➢समकालीन अरब लेखकों के विवरण भी प्रतिहार इतिहास पर कुछ प्रकाश डालते हैं

➢दूसरा लेखक अलंमसूदी जो दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में पंजाब आया था।

➢प्रायः सभी मुसलमान लेखक प्रतिहारों की शक्ति, देशभक्ति तथा समृद्धि की प्रशंसा करते हैं।

इस प्रकार अभिलेख, साहित्य तथा अरब लेखकों के विवरण, इन तीनों का उपयोग हम प्रतिहारवंश के इतिहास अध्ययन करने के लिये करते हैं।

उत्पत्ति

➢

विभिन्न राजपूत वंशों की उत्पत्ति के समान गुर्जर प्रतिहारवंश की उत्पत्ति भी विवादग्रस्त है।

➢जो हूणों के साथ भारत में आई इस मत का समर्थन सवसे पहले कैम्पबेल तथा जैक्सन ने किया और वाद में भण्डारकर तथा त्रिपाठी आदि भाम विद्वानों ने भी इसे पुष्ट कर दिया।

➢ किन्तु यह मत कोरी कल्पना पर आधारित है क्योंकि विदेशी आक्रमणकारियों में नामक किसी भी जाति के विषय में हमें भारतीय अथवा विदेशी साक्ष्य से कोई भी सूचना नहीं मिलती।

कुछ अन्य विदवानों के अनुसार उनका मूल निवास स्थान उज्जयिनी (अवन्ति) में थो।

राजनैतिक इतिहास

नागभट्ट प्रथम

गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक नागभट्ट प्रथम (730-756 ईस्वी) था। वह एक पराक्रमी शासक था।

- यह म्लेच्छ संभवतः सिन्ध का अरव शासक था

- ग्वालियर लेख में कहा गया है कि 'म्लेच्छ राजा की विशाल सेनाओं को चूर करने वाला मानो नारायणरूप में वह लोगों की रक्षा के लिये उपस्थित हुआ था।'

वत्सराज

➢नागभट्ट प्रथम के पश्चात् उसके दो भतीजों- कक्कुक तथा देवराज ने शासन किया। वे दोनों निर्बल शासक थे जिनकी किसी भी उपलब्धि के विषय में हमें ज्ञात नहीं है।

➢इस वंश का चौथा शासक वत्सराज (775-800 ईस्वी) हुआ जो देवराज का पुत्र था।

➢उसने कन्नौज पर आक्रमण कर वहाँ के शासक इन्द्रायुध को हराया तथा उसे अपने अधीन कर लिया।

नागभट्ट द्वितीय

➢अपनी स्थिति मजबूत बना लेने के बाद नागभट्ट ने पालों के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया जिनके शासक धर्मपाल के हाथों उसके पिता वत्सराज को पराजय हुई थी। मुंगेर के समीप एक युद्ध में उसने धर्मपाल के नेतृत्व में पालसेना को भी पराजित कर दिया।

➢ इस युद्ध में कड्क, बाहुक धवल तथा शंकरगण जैसे उसके सामनों ने भी भाग लिया था। चाट्सु लेख में कहा गया है कि शंकरगण ने गौड़नरेश को हराया तथा समस्त विश्व को जीतकर अपने स्वामी को समर्पित कर दिया था।

➢यहाँ स्वामी से तात्पर्य नागभट्ट से ही है। इस प्रकार तह उत्तरी भारत का शक्तिशाली शासक बन बैठा। अपनी महानता एवं पराक्रम को सूचित करने के लिये नागभट्ट ने परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर की उपाधि धारण की।

रामभद्र

नागभट्ट द्वितीय के बाद उसका पुत्र रामभद्र गद्दी पर बैठा। वह अत्यन्त दुर्बल शासक था जिसने मात्र तीन वर्षों तक राज्य किया।

➢उसके समय में प्रतिहारों को पालों के हाथों पराजय उठानी पड़ी। नारायणपाल के बादल लेख से सूचित होता पपुर है कि देवपाल ने गुर्जर राजाओं के घमण्ड को चूर-चूर कर दिया था।

➢ यहां तात्पर्य रामभद्र से ही प्रतीत होता है। किन्तु साम्राज्य के कुछ दूरस्थ प्रदेशों पर उसका अधिकार बना रहा।

मिहिरभोज प्रथम

➢
रामभद्र का पुत्र और उत्तराधिकारी मिहिरभोज प्रथम (836-885 ईस्वी) इस वंश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासक हुआ। वह उसकी पत्नी अप्पादेवी से उत्पन्न हुआ था।

➢लेखों से उसके दो अन्य नाम प्रभास तथा आदिवराह भी मिलते है। उसके शासनकाल की घटनाओं की सूचना अनेक लेखों से प्राप्त होती है जिनमें से कुछ स्वयं उसी के तथा कुछ उसके उत्तराधिकारियों के है।

➢उसका सर्वप्रमुख लेख ग्वालियर से मिलता है जो प्रशस्ति के रूप में हैं। लेखों के अतिरिक्त कल्हण तथा अरब यात्री सुलेमान के विवरणों से भी हम उसके काल की घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

THANK YOU!